इस पीठ को सुशोभित कर रही है
यही पंद्रहवीं लोक सभा महिला प्रतिनिधित्व के असंतुलन को भी खत्म करेगी। इस आशा को मै
....*(व्यवधान)* पहले भी नेता प्रतिपक्ष महिलाएं रही है
गांधी बहुत साल तक इधर इसी सीट पर बै
गांधी भी नेता प्रतिपक्ष रही है
इस सदन की परिपक्वता का जिक्र करना चाहूंगी। कितने ही अवसर ऐसे आए है
बार तो वयम् पंचाधिकम शतम्, की उक्ति को यहां चरितार्थ किया है
पांडव अपने-अपने कै क्रमण कर दिया तो भीम, धर्मराज युधिष्ठिर के पास पहुंचे। उन्होंने कहा कि आज तो गंधर्वों ने कौ क्रमण कर दिया। वे आज रात को खत्म हो जाएंगे। धर्मराज युधिष्ठिर खड़े हुए औ एक श्लोक बोला:

परस्पर: विरोधेतु वयम् पंचच: ते शतम्
परहि परिभवे प्राप्ते वयम् पंचाधिकम शतम्।

इसका अर्थ है
होते है क्रमण करता है
उद्‌बोधन में आपने जो तीन जिक्र किए—62, 71 औ
अवसर थे जब इस सदन में पक्ष औ
औ

एक दूसरा प्रसंग आया जो चुनौ
ग्यारह साथी प्रश्न पूछने के बदले पै
ऑपरेशन में पकड़े गए। क्रिमिनल जूरिस्प्रूडन्स का तकाजा था कि बिना ट्रायल के उन्हें सजा नहीं दी जाती। लेकिन हम तकनीकियों में नहीं गए। हमने कहा कि देश की आस्था इस सदन में बनी रहे इसलिए तकनीकियों में न जाकर इनका निष्कासन करो। इस सदन ने निष्कासन कर के इस देश की आस्था को बरकरार रखा। यह इस सदन की परिपक्वता है

इससे भी बड़ी लोकतंत्र की परिपक्वता का उदाहरण मै चाहूंगी। अध्यक्षा जी, हमें गर्व है
का हस्तांतरण कभी गोली या बंदूक से नहीं हुआ, हमेशा वोट से हुआ। मै
गिरी थी। हम लोग सभा भंग कर चुनाव में गए थे औ
जनादेश लेकर यहां वापस आए थे लेकिन कोई तिकड़म से सरकार जुटाने का हम लोगों ने प्रयत्न नहीं किया था। हम ऐसे क्षेत्र में रहते है
गया, फांसी पर लटकाया गया, नजरबंद कर के रखा गया। लेकिन भारत आज कह सकता है
बदलता है
लेकिन मुझे दु:ख होता है
खड़े होने के बावजूद मानवीय मानदंडों में, शिक्षा, स्वास्थ्य जै
में हम विश्व के निचले पायदान पर खड़े है

गरीबी, कुपोषण हमारी समस्या है
कारण भारत विश्व में सिर ऊंचा करके खड़ा है
लोकतंत्र। दुख होता है
है
हूं, लोकतंत्र का विकल्प तानाशाही हुआ करता है
बिना संसद के नहीं कर सकते औ
के नहीं कर सकते। चुनौ
व्यवस्था में, विकृतियां भी आई है
लोकतंत्र पर प्रहार करना नहीं है
को दूर करेंगे, उन दोषों का समाधान ढूंढ़ेगे। लेकिन दोषों का समाधान क्या है
की बुराइयों का इलाज क्या है
आज भारतीय संसद की साठवीं वर्षगांठ के अवसर पर मै
पर अपनी बात को समाप्त करना चाहूंगी कि हम औ
प्रक्रिया का इस्तेमाल करते हुए अपने लोकतंत्र की बुराइयों का समाधान करें। लोकतंत्र पर प्रहार करके कोई आत्मघाती कदन न उठाएं।

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (डॉ. मनमोहन सिंह) : अध्यक्ष महोदया, मै
सभा के सदस्यों औ
60वीं वर्षगांठ के अवसर पर बधाई देता हूं।

महोदया, लोकसभा भारतीय लोगों की अदभुत विभिन्नता औ बुद्धिमता का वास्तविक प्रतिधिनितव करती है
क्षेत्र समुदाय, धर्म औ

[डॉ. मनमोहन सिंह]

से कुछ सदस्यों ने ओजस्वी वक्ता औ
की अमिट छाप छोड़ी है
हो अथवा सत्तापक्ष, इस सदन ने सामान्य भारतीयों के दुख-दर्द को वाणी दी है
औ
संविधान ने जिसकी कल्पना, संसद ने उसे साकार किया।

महोदया, जै
एक संतोष होता है
लोगों की इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है
के संस्थापकों द्वारा स्थापित आदर्शों पर खरी उतरी है

1940 औ
करने वाले एशिया, अफ्रिका औ
सै
दूसरी ओर भारत ने अटूट लोकतांत्रिक परंपरा बनाए रखी है
15 आम चुनावों औ
हुए है

महोदय, इस महान कक्ष ने हमारे राष्ट्र की विकास गाथा-वाद-विवाद औ
औ
पारित किए है
औ
प्रत्येक नागरिक को सामाजिक औ
अवसर औ

हाल के ही वर्षों में हमने अपने नागरिकों को सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार औ
सशक्त बनाया है
पिछड़े वर्गों अल्पसंख्यकों औ
वर्गों की सहायता के लिए सकारात्मक उपाय किए है
हूं कि यह अधूरा कार्य है

आपदा औ
सामूहिक संकल्प को प्रतिबिम्बित करने औ
साथ एक जुटता दर्शाने की क्षमता का प्रदर्शन किया है
1962, 1965, 1999 का विदेशी हमला हो अथवा 1971 के गौ
क्षण इस संस्था ने लोगों की साझा आकांक्षाओं औ
परिलक्षित करने के लिए राजनीतिक विभेद पर विजय प्राप्त की है

तथापि, यदि हम आगे की ओर देखें तो यह अवसर हमारे लिए कुछ बेबाक औ
प्रकार हमने विशेषकर गत कुछ वर्षों के दौ
है
में दिन प्रतिदिन व्यवथान, सिगनों औ
प्रभावशालिता औ
से बाहर कई प्रश्न को जन्म दे रहे है

यदि हमें इस संस्था के गौ
हममें से प्रत्येक को अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। हमें यह संकल्प करने की आवश्यकता है क्रया औ
संबंधी नियमों जिसका हमने सामूहिक रूप से विकास किया है
अक्षरश: पालन हो जब तक हम संसद के कार्यकरण में बढ़ते हुए गतिरोध को दूर करने का कोई उपाय नही निकालेगें तब तक जनता को मोहभंग होता रहेगा। राजनै
मुद्दों को उठाने के लिए साधनोपाय तलाश करने के लिए एक साथ बै
जोकि प्रत्येक अवसर पर संसद की कार्यवाही अवरुद्ध नही करता हो।

महोदया, मेरा मानना है
हमें अपने राष्ट्र का कार्य किस प्रकार संचालित करना चाहिए जिसमें हम सब जिम्मेवार भूमिका अदा करते है
पर आधारित है
चाहिए। मेरा मानना है
की दीर्घकालिक आवश्यकताओं औ
बीच संतुलन बनाए रखे। दीर्घकालिक विकास की आवश्यकताओं औ वर्तमान चुनावी राजनीति के विरोधी मांगों के बीच अवश्य ही संतुलन स्थापित किया जा सकता है

हमारा उस जनता के प्रति पावन औ
हमें निर्वाचित किया है
हमारा नै
में रखना चाहिए कि यहां आज हमारा आचरण औ
हम करते है
में यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा आचरण औ

कृत्यों का निर्वहन कर रहे है
अगली पीढ़ियों को विरासत में देंगे का निर्धारण करेगा।

अंत में महोदया, मै
हमारे लोगों की अंतर्निहित बुद्धिमता औ
की शक्ति हमें सही मार्ग पर ले जाने के लिए मार्गदर्शन करेगी
ताकि हम एक सुरक्षित औ

धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया।

अपराह्न 4.29 बजे

विदाई उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, जबकि हम संसद की पहली बै
विशेष बै
60 वर्षों की यात्रा'' विषय पर चर्चा में भाग लेने के लिए मै
सदस्यों की उपस्थिति औ

माननीय नेताओं औ
कार्यवाही की गरिमा बढ़ी है

यह ऐसा समय था जबकि 60 वर्ष की हमारी यात्रा प्रतिबिम्बित हुई है
यह कदाचित नहीं है
औ
आगामी चुनौ
औ

आज की चर्चा जो कि लगभग पांच घंटे सोलह मिनट चली उसमें लगभग 41 सदस्यों ने भाग लिया। लगभग 90 सदस्यों ने सदन के पटल पर अपने लिखित भाषण रखे औ
की कार्यवाही का हिस्सा होंगे।

मै
माननीय प्रतिपक्ष की नेता, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय अध्यक्ष संप्रग, माननीय आडवाणी जी, सभी दलों के नेताओं औ

की तालिका में मेरे सहयोगियों का इस विशेष बै
औ

अपराह्न 4.30 बजे

संकल्प

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब, मै
करती हूं:

''हम, लोक सभा के सदस्य, संसद की पहली बै
वर्षगांठ के उपलक्ष्य में लोक सभा की विशेष बै
लेकर:

- देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपने स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए बलिदान तथा मानव जाति में समानता, बंधुत्व, न्याय, भाईचारा बनाए रखने तथा समाज के वंचित औ दलित वर्गों के उत्थान में संविधान के संस्थापक सदस्यों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका का कृतज्ञता के साथ स्मरण करते हुए;

- लोकतांत्रिक मूल्यों को संजोने तथा राष्ट्र की एकता औ अखंडता के लिए अनवरत रूप से कार्य करने वाले भारत के लोगों की परिपक्वता को संतोष औ
साथ स्वीकार करते हुए; औ

- इस बात को ध्यान में रखते हुए कि विगत 60 वर्षों में संसद ने युगान्तकारी कानूनों के माध्यम से सभी मामलों में समानता औ
की उद्देशिका में अंतर्निहित आदर्शों के प्रति अपनी गहरी आस्था औ
समाज की स्थापना की दिशा में निर्णायक कदम उठाए है

एतद् द्वारा अपने संस्थापक सदस्यों द्वारा संजोए गए आदर्शों के प्रति अपनी पूर्ण औ
करते है